Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

सितम्बर /2024 ई॰

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Sept/2024

Date of Publication:20-09-2024

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

29.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला मोरेना (मध्य प्रदेश) में तक़सीमे अनामात का एक दृश्य।

22.9.2024 को बठिंडा में एक नासिर को क़ुरआने मजीद का पंजाबी अनुवाद भेंट करते हुए श्री अब्दुल मोमिन राशिद नायब सदर अव्वल भारत

22.9.2024 अबलुकोटली (ज़िला बठिंडा) पंजाब में आयोजित मेडिकल कैंप आरम्भ के अवसर का एक दृश्य।

23.9.2024 कोटकपूरा पंजाब में आयोजित मेडिकल कैंप में श्री डॉक्टर सय्यद सईद अहमद, श्री खालिद अहमद अल्लादीन क़ाइद इसारो खिदमते ख़ल्क़ दवाइयां देते हुए।

15.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला बैंगलोर, मंगलोर (कर्णाटक)के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य।

21.9.2024 को मजलिस अंसारुल्लाह थिरूर (केरला) द्वारा आयोजित तब्लीग़ी प्रोग्राम का एक दृश्य ।

3,4.8.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला तिरुनेलवेली, कन्याकुमारी, तूतीकोरिन, तेनकासी (तमिल नाडु) के अवसर हाज़िर अंसार सदस्य।

21.9.2024 को ज़िला पालक्काड, त्रिशूर (केरला) द्वारा शांति के स्थापना के लिए किये गए प्रचार का एक दृश्य।

27.7.2024 को चेलाकारा (ज़िला त्रिशूर) केरला में आयोजित रक्त दान का एक दृश्य।

20.7.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह उडांगुड़ी ज़िला तिरुनेलवेली (तमिल नाडु) के दृश्य।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज

उप-सम्पादक(हिन्दी)

डॉ.अब्दुल माजिद

9915279005

मनैजेर

ताहिर अहमद बेग

99152 23313

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य :250 ₹
विदेश: 50अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता
मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume – 22 सितम्बर 2024 Issue -09

विषय सचि	पृष्ठ
दर्सुल कुरान	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय: नमाज़ बाजमाअत और अन्सारुल्लाह के आदर्श	4
निवेदन सदर मज्लिस: जलसा सालाना यू.के. २०२४ में शमूलियत	5
सालाना इज्तेमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत में मुक़ाबला तकारीर के लिए	7

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed @ Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published @ Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

कुरान करीम

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ○ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا○ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا○وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ○

(سورۃ الاحزاب:46تا49)

ऐ नबी !निश्चित रूप से हमने आपको एक गवाह, एक खुशखबरी देने वाला और एक चेतावनी देने वाला बना कर भेजा है, और ईश्वर के आदेश से बुलाने वाले और एक प्रकाशमान सूर्य की तरह। और मुमिनों को खुशखबरी दें कि) यह (उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा एहसान है। और काफिरों और मुनाफ़िकों की आज्ञा मत मानो और उनकी तंग करने वाली बातों को नज़रअंदाज़ कर दो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह ही काफी है, जो कामयाबी देने वाला है।

हदीस नबवी ﷺ

عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامِ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اَتَيْتُ عَائِشَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا فَقُلْتُ يَا اُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ اَخْبِرِيْنِیْ بِخُلُقِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ اَمَا تَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَوْلَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ۔

(مسند احمد صفحہ ۹۰جلد۶، دلائل النبوۃ للبیہقی صفحہ۳۰۹ جلداوّل)

हज़रत साद बिन हिशाम बिन आमिर बयान करते हैं कि मैं हज़रत 'आइशा रज़िअल्लाहु अन्हु की खिदमत में हाज़िर हुआ और उनसे अर्ज़ किया कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अफ़ज़ल आचरणों के बारे में कुछ बताएँ। हज़रत 'आइशा रज़िअल्लाहु अन्हु ने बताया कि हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ के आचरण और व्यवहार कुरान के बिल्कुल अनुरूप थे। फिर पूछा कि क्या आपने कुरान में यह नहीं पढ़ा, 'وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ' कि हे रसूल !निश्चित रूप से तुम महान आदर्शों पर हो।

हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

हमने सब कुछ पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से ही पाया है।

"दुनिया में लाखों ऐसे अच्छे स्वभाव के लोग गुजर चुके हैं और आगे भी आएंगे, लेकिन हमने सबसे बेहतरीन, सर्वोच्च और सबसे सुन्दर इंसान पाया है, जिसका नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। إِنَّ اللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (الاحزاب:57)। ... हम अल्लाह की कसम खाकर कहते हैं कि अगर पैगंबर मुहम्मद ﷺ दुनिया में न आते और कुरान नाज़िल न होता और हम उन सभी खुशियों को अपनी आँखों से न देखते जो हमने देखीं, तो इन सभी पूर्ववर्ती नबियों की सच्चाई हमारे लिए संदेह में पड़ जाती, क्योंकि सिर्फ़ कहानियों से कोई सच्चाई नहीं मिल... क्योंकि अब उनका कोई नामोनिशान नहीं है, और उन पुरानी किताबों से तो अल्लाह का पता भी नहीं चलता, और ये समझना नामुमकिन है कि अल्लाह भी इंसान से बात करता है। लेकिन पैगंबर मुहम्मद ﷺ के आने से ये सब कहानियाँ सच्ची साबित हो गईं। अब हम ज़बान नहीं, बल्कि हकीकतों के ज़रिए समझते हैं कि इलाही मुकालीमा (कलाम) क्या होती है, और अल्लाह के निशान कैसे दिखाई देते हैं, और दुआएँ कैसे कबूल होती हैं। सब कुछ हमने पैगंबर मुहम्मद ﷺ की अनुसरण से ही पाया है, और जिस तरह के दूसरे लोग कहानियाँ सुनाते हैं, हमने उन्हें खुद देखा है। हमने ऐसे नबी का हाथ पकड़ा है जो ख़ुद अल्लाह जैसा है। किसी ने बहुत अच्छा शेर लिखा है:

मुहम्मद ﷺ अरबी बादशाह हर दो सरा — करे है रूह-उल-क़ुदूस जिसके दर की दरबानी
उसे खुदा तो नहीं कह सकते, लेकिन कहते हैं — कि उसकी मरतबा दानी में है खुदा दानी

उन लोगों ने किस ज़ुबान से अल्लाह का शुक्रिया अदा किया, जिन्हें ऐसे नबी का अनुसरण करने का मौका मिला, जो सौभाग्यशाली आत्माओं के लिए सूरज की तरह हैं, और शरीरों के लिए सूरज की तरह हैं। वह अंधेरे के समय प्रकट हुआ और दुनिया को अपनी रोशनी से जगमगा दिया। वह थका नहीं और रुका नहीं, जब तक कि अरब के हर हिस्से को शिर्क से मुक्त नहीं कर दिया। वह अपने आप में अपनी सच्चाई का प्रमाण है, क्योंकि उसका प्रकाश हर ज़माने में मौजूद है और उसका सही अनुसरण इंसान को उतना ही साफ़ और पारदर्शी बना देता है, जितना साफ़ और पारदर्शी नदी का पानी गंदे कपड़ों को साफ़ कर देता है। कौन सच्चे दिल से हमारे पास आया है जिसने उस रोशनी को न देखा हो, और किसने ईमानदारी से उस दरवाज़े को खटखटाया हो, जो उसके लिए नहीं खुला? लेकिन अफ़सोस !कि अधिकतर इंसानों की यही आदत है कि वे नीच ज़िन्दगी को पसंद करते हैं और नहीं चाहते कि रोशनी उनके अंदर प्रवेश करे।"

(चश्मा-ए-मारिफ़त,रूहानी खज़ाइन, खंड 23, पृष्ठ 301 से 303)

सम्पादकीय

नबी ﷺ की सादगी

नबी ﷺ की सरल जीवनशैली से हमें सदेव मार्गदर्शन मिलता है। आप सहजता और सरलता का जीवन जीते थे।एक बार हज़रत 'आइशा رضی اللہ عنہ ने कि नबी ﷺ के बिस्तर पर दो बजाय चार परतें बिछा दीं। नबी ﷺ ने फ़रमाया, "पहले जैसा ही बिछाएँ, वही सही है। आज रात तो इस आराम ने मुझे तहज्जुद की नमाज़ से रोक दिया। " (शिमाइल)हज़रत 'आइशा رضی اللہ عنہ ने एक बार हज़रत अबू बरदा رضی اللہ عنہ को सूती कम्बल और तह-बंद दिखाया और बताया कि नबी ﷺ ने अपने अंतिम समय में ये कपड़े पहने थे।(बुखारी)

रसूलुल्लाह ﷺ की सवारी भी मामूली थी। आप ﷺ गधे या खच्चर पर सवारी करने में कोई शर्म नहीं महसूस करते थे। सवारी के वक़्त पीछे किसी को बिठाना आपको कोई बुरा नहीं लगता था। नबी करीम ﷺ अपने साथियों के साथ भी सहजता से पेश आते थे। एक बार, आप ﷺ को एक फ़ारसी पड़ोसी ने दावत पर बुलाया। आप ﷺ ने बिना किसी हिचकिचाहट के पूछा, "क्या मेरी पत्नी 'आइशा رضی اللہ عنہ को भी दावत दी गई है?" उसने कहा, "नहीं। "आप ﷺ ने कहा, "तो मैं भी नहीं आऊँगा। "दो-तीन बार पूछने पर, आखिरकार फ़ारसी पड़ोसी ने कहा कि हां, हज़रत 'आइशा رضی اللہ عنہ भी आएँ। तब नबी ﷺऔर हज़रत 'आइशा رضی اللہ عنہ खुश होकर उनके घर की तरफ़ चले गए।(मसनद अहमद)

हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम कहते हैं, "ख़ुदा के नबियों का जीवन सरल होता है ...उनकी प्रकृति ही ऐसी होती है कि वे शोहरत से कोसों दूर भागते हैं और अज्ञात रहना चाहते हैं। लेकिन वह ख़ुदा ... ज़बरदस्ती उन्हें ख़ुसूसियत से आम लोगों के बीच ले आता है और धरती पर अपने नुमाइंदे बनाकर उनके ज़रिए दिलों को सच्चाई की ओर खींचता है और उनके लिए बड़े-बड़े करिश्मे दिखाता है,... और क्योंकि वे धरती पर ख़ुदा के नुमाइंदे होते हैं, इसलिए हर उचित वक़्त पर ख़ुदा के गुण उनके ज़रिए ज़ाहिर होते हैं, और कोई ऐसा काम उनके ज़रिए ज़ाहिर नहीं होता जो ख़ुदा के गुणों के खिलाफ़ हो। (चश्मा-ए-मारिफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 23, पृष्ठ 296)

हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह ताअला बिनसरिहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"नबी ﷺ ने यह सच्चाई बताई कि हर मामले में संतुलन और उसके हक़ को अदा करना ही असली धर्म है। आप ﷺ ने कहा कि ज़रूर, इबादत बेहद ज़रूरी है, ज़िन्दगी का मकसद है, लेकिन 'وَلِنَفْسِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ وَلِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ وَلِجَارِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ' अर्थात्, तुम्हारे शरीर का भी तुमपर हक़ है, तुम्हारी पत्नी का भी तुमपर हक़ है, और तुम्हारे पड़ोसी का भी तुमपर हक़ है। और इन हक़ों को पाने के लिए हमें तीन तरीके अपनाने होंगे। पहला, दुआ करना, अल्लाह की तरफ रुख़ करना और इबादत करना। दूसरा, अपने मन पर काबू रखना, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना और इंसानी मनोविज्ञान को समझना। तीसरा, अपने काम और पेशे में ईमानदारी से काम करना और दुनियावी और विज्ञान का ज्ञान हासिल करना ज़रूरी है। "(ख़ुत्बा जुम्मा, 24 अप्रैल 2015)

दुआ है कि अल्लाह ताअला हमें नबी ﷺ के अंदाज़ में सरल ज़िन्दगी जीने की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

हाफ़ीज़ सैय्यद रसूल नियाज़

निवेदन सदर मज्लिस

जलसा सालाना यू.के. २०२४ में शमूलियत

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, ज्यादातर लोग कहते सुनाई देते हैं, "समय नहीं है।" दरअसल, हर बड़े-छोटे इंसान के पास वक़्त एक ऐसी चीज़ है जो बराबर बँटी हुई है। जिसने वक़्त का सही इस्तेमाल किया, वह कामयाब हुआ, और जिसने गलत इस्तेमाल किया, वह नाकामयाब हुआ।

इस नज़रिए से, जब हम हमारे आका और मौलान हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के जीवन को देखते हैं, तो उनकी दिनचर्या में हमें एक बेहतरीन आदर्श मिलता है। आप ﷺने हर हालात में, चाहे वो मुश्किल थे या आसान, अपने दिन को तीन हिस्सों में बाँटा हुआ था। दिन का एक हिस्सा इबादत के लिए, एक हिस्सा परिवार के लिए, और एक हिस्सा अपनी ज़रूरतों के लिए निर्धारित था। फिर अपनी ज़रूरत के वक़्त को भी काफी हिस्सा इंसानियत की सेवा में लगा देते थे।

(अल-शिफ़ा बितैय्यर हक़ूक़-उल-मुस्तफ़ा, इमाम 'इयाज़ की किताब, खंड 1, पृष्ठ 136, दारुल-किताब-उल-अरबी)

इसलिए, नबी करीम ﷺ के 23 साल के जीवनकाल में से 13 साल मक्की दौर में कुरान के अवतरण, तबलीग़ की कोशिश, इस्लाम स्वीकार करने वालों की शिक्षा और परीक्षाओं और मुसीबतों का एक महत्वपूर्ण समय था।

मदीना में, आप ﷺ रोज़ अपनी दिनचर्या का आगाज़ तरावीह की नमाज़ से करते थे। नमाज़ से पहले, वुज़ू करते हुए मिसवाक इस्तेमाल करते और मुँह अच्छी तरह साफ़ करते थे। बहुत ही सुंदर और लंबी तरावीह की नमाज़ पढ़ते, जिसमें कुरान की लंबी तिलावत करते थे। नमाज़ के बाद, आप ﷺ थोड़ी देर लेट जाते थे। अगर घर वालों में से कोई जाग रहा होता तो उससे बात करते, नहीं तो आराम करते। फिर जैसे ही हज़रत बिलाल ؓ की नमाज़ की आवाज़ आती, तुरंत दो रकअत नमाज़-ए-सुन्नत पढ़कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाने मस्जिद नबवी में चले जाते। फ़ज्र की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने तक, आप ﷺ अपने साथियों के बीच रहते थे।

(मुसलिम, किताबुल-मसाजिद)

रसूलुल्लाह ﷺ सुबह ही अपने दिन का कार्यक्रम तय कर लेते थे। अगर किसी साथी को तीन दिन से ज़्यादा अनुपस्थित पाते तो उसके बारे में पूछते। अगर वह यात्रा पर होता तो उसके लिए दुआ करते। अगर शहर में होता तो उससे मिलने जाते। अगर बीमार होता तो उसकी ज़ियारत के लिए जाते।

(कन्ज़ुल-अमाल, जिल्द 7, पृष्ठ 153)

नबी ﷺ की ये ज़िंदगी की आदतें थीं: ठंड या गर्मी, हर मौसम में, सुबह-सुबह मदीना के बच्चों के बर्तनों में आप ﷺ अपनी उँगलियाँ डालकर, उनके लिए बरकत कि दुआ देते थे।(मुसलिम) हमारे नबी ﷺ पांच वक़्त की नमाज़, जुम्मा और ‘ईद की नमाज़की इमामत करते थे। घर के काम-काज में, घरवालों की मदद करते थे। अपने हाथों से काम करने में कोई शर्म नहीं मानते थे। कपड़े खुद सिलते, दरज़े लगाते, ज़रूरत पड़ने पर जूते की मरम्मत भी करते, झाड़ू भी लगाते, ज़रूरत पड़ने पर जानवरों को बांधते और उनका चारा देते, दूध भी दोहते। ख़ादिम थक जाते तो उनकी मदद करते। बैतूल-माल के जानवरों को चिह्नित करने के लिए खुद निशान लगाते थे। (मुसलिम)

रसूलुल्लाह ﷺ की एक बहुत ज़रूरी जिम्मेदारी कुरआन का उतरना और उसकी हिफ़ाज़त करना थी। इसके लिए आप ﷺ अपना काफी वक़्त समर्पित करते थे।

हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह ताअला बिनसरिहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा ताअला हमें नबी ﷺ का आदर करने और उनके अनुसरण करने की तौफ़ीक़ दे, और हम भी अपनी क्षमताओं के मुताबिक़ उनके अदर्शों पर चल सकें। हमें हर एक को अपनी योग्यताओं के हिसाब से नबी ﷺ के अंदाज़ पर चलने और उनका अनुसरण करने की तौफ़ीक़ दे, और मुसलमानों को भी तौफ़ीक़ दे कि वे नबी ﷺ के सच्चे प्रेमी(हज़रत मसीह मौऊद) को पहचानें और उस पर ईमान लाएं।"

(ख़ुत्बा जुम्मा, 20 अक्टूबर 2017)

अतउल मुजीब लोन

अध्यक्ष, मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत के सालाना इजतेमा की तक़रीर प्रतियोगिताओं के लिए

(4) विश्व-शाति हेत् हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस के प्रयास

(मोहम्मद इब्राहिम सरवर, उपसंपादक, अन्सारुल्लाह)

आज दुनिया में अन्याय, अशांति, और बेचैनी व्याप्त है। इसका कारण यह है कि जनता और उनके नेता अपने स्वार्थ को हर कीमत पर पूरा करना चाहते हैं, भले ही इससे जान-माल या पर्यावरण का नुक़सान हो। यही वजह है कि दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर अग्रसर है। अगर अब भी इंसान सोच-विचार करने से अपनी आखें मूंदे रहेंगे तो अपने नाश और बर्बादी से बचना बहुत मुश्किल हो जाएगा।

कुरआन के वादे "لِيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ" और "وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا" के अनुसार, शांति के दूत, हज़रत ख़लीफातुल मसीह अय्यदहुल्लाह 2003 में ख़िलाफ़त संभालते ही,पहले खुलफा की तरह, विश्व शांति के लिए प्रयासरत हैं । वे शांति के दूत के तौर पर दुनिया भर की यात्राएं करते और विभिन्न देशों में जाकर, इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षाओं का प्रचार करते हैं। वे दुनिया भर और ख़ास तौर पर मुस्लिम देशों के नेताओं को अशांति के कारणों को समझाने और उन्हें सही रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं। अपने भाषणों और ख़ुत्बों में, वे शांति स्थापना के लिए तत्पर दिखते हैं।

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

शांति बनाने के लिए, उन्होंने 2012 में में अमेरिका, कनाडा, इज़राइल, जर्मनी, फ्रांस, ईरान, सऊदी अरब, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस के राष्ट्र प्रमुखों तथा ब्रिटेन की महारानी धार्मिक नेताओं में, ईसाई धर्म के प्रमुख नेता पोप और ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता, आयतुल्लाह ख़ामनेई सहित कई देशों के नेताओं और प्रभावशाली धार्मिक नेताओं को पत्र लिखे, ताकि उनसे शांति और भाईचारे के लिए सहयोग और प्रयास करने का आग्रह किया जा सके। इन पत्रों में, उन्होंने प्रभावशाली नेताओं से शांति, एकता, दूसरे देशों के अधिकारों का सम्मान, सम्मानजनक व्यवहार, और दुनिया भर की लड़ाईयों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने की अपील की। उन्होंने चेतावनी दी कि वर्तमान स्थिति एक और विश्व युद्ध की ओर ले जा सकती है, और दुनिया के नेताओं को अपने प्रभाव का इस्तेमाल झगड़ों को रोकने के लिए करने की सलाह दी।

हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस की अगुवाई में वैश्विक शांति के प्रयास:

ख़लीफ़ातुल मसीह खामिस के नेतृत्व में, अहमदिया जमाअत ने दुनिया भर में शांति प्रयासों को आगे बढ़ाया है। ब्रिटेन में सालाना शांति संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है और इसी तरह की संगोष्ठियां और सम्मेलन भी आयोजित किए जाते हैं। इसी अगुवाई में, 2009 से अहमदिया मुस्लिम शांति पुरस्कार शुरू किया गया है। हज़रत इमाम दुनिया के विभिन्न देशों की संसदों में भाषण देते हैं और राजनीतिक नेताओं से मुलाकात करके उन्हें

इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षाओं से अवगत कराते हैं जो स्थायी शांति के लिए ज़रूरी हैं। दुनिया को शांति का संदेश देते हुए, आप फ़रमाते हैं:"दुनिया को आज शांति की, प्यार की, भाईचारे की, और युद्धों के विनाश से बचने की ज़रूरत है। ख़ुदा के प्यार को अपनाने की ज़रूरत है ताकि बर्बादी से बचा जा सके। इसके लिए ईसाइयों को भी अपने विश्वासों पर ध्यान देना चाहिए, और मुसलमानों को भी उचित प्रतिक्रियाएँ देनी चाहिए। बहस करें, चर्चाएँ करें, लेकिन एक-दूसरे के धार्मिक भावनाओं का ख्याल रखना ज़रूरी है।(ख़ुत्बा जुम्मा, 20 अगस्त 2010)

अब इसी गुलशन में लोगों राहतो आराम है
वक़्त है जल्द आओ ऐ आवारगाने दश्त ए खार

अंत में, दुआ है कि अल्लाह ता'आला हुज़ूर अनवर का हर पल मुहाफ़िज़ और मददगार हो, और पूरी दुनिया को शांति की स्थापना के लिए, उनके बताए मार्गदर्शन को अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

(5) बच्चों की परवरिश का आधार ख़िलाफ़त से जुड़ाव है।

(सैय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़)

(काइद इशाअत अन्सारुल्लाह भारत)

खिलाफ़त कश्ती ए की उम्मीदवारों का यारा है
जो सच पूछो तो यह मिल्लत का एक वाहिद सहारा है
न जब कारवाँ में हो इमाम-ए-कारवाँ कोई
नहीं होता किसी का इस जहाँ में पासबाँ कोई

आदरणीय अध्यक्ष महोदय और सम्मानित श्रोताओं !आज की इस महत्वपूर्ण सभा में मेरा विषय है, "बच्चों की परवरिश का आधार ख़िलाफ़त से जुड़ाव है। "परवरिश किसी व्यक्ति, समाज या समूह का ऐसा विकास है जो उन्हें मानवीय उत्कृष्टता के उच्च स्तर तक पहुँचाता है। किसी भी समाज की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए ज़रूरी है कि हर इंसान उसमें योगदान दे और अपना दायित्व निभाए। अल्लाह ता'आला कहते हैं, "और तुम में से एक समूह होना चाहिए जो भलाई की ओर बुलाता रहे, अच्छे कामों की शिक्षा देता रहे और बुरे कामों से रोकता रहे। यही लोग कामयाब होते हैं।"(सूरह आले इमरान 105)अर्थात्, प्रचार, शिक्षा, और समाज सुधार किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है, बल्कि ये सब मिलकर काम करना होता है। अगर हर सदस्य इस कुरआनी सिद्धांत को समझ ले तो समाज सुधार का काम बहुत आसानी से हो सकता है। इसलिए अगर कोई समाज खुद को लम्बे समय तक जीवित रखना चाहता है, तो उसके लिए ज़रूरी है कि वह अपनी आने वाली पीढ़ियों को अच्छी तरह से तैयार करे, ताकि वे इस प्रगति की दौड़ में शामिल रह सकें और उनकी पीढ़ियाँ इस महत्त्वपूर्ण ख़िदमत से वंचित न रहें।

हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह ताअला बिनसरिहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं, "जमाअत की तरक्की हमारे बच्चों की परवरिश से नहीं, बल्कि हमारी और आने वाली पीढ़ियों का अस्तित्व जमाअत से जुड़े रहने पर निर्भर करता है। जमाअत और इस्लाम की फतह तो अल्लाह का वादा है, अल्लाह की नियति है ...अगर हम में से कोई रास्ते की मुश्किलों को देखकर कमज़ोर पड़ता है, अगर हमारी औलादें हमारे ईमान में कमज़ोरी लाती हैं, अगर हम अपनी औलादों को उनके ज़िम्मेदारियों से दूर करते हैं, तो इससे हमारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा ।

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर, जिल्द आठवीं, पृष्ठ 507)

नबी ﷺ ने फ़रमाया, " اَلْإِمَامُ جُنَّةٌ يُّقَاتَلُ مِنْ وَّرَائِهٖ وَيُتَّقٰى بِهٖ इमाम ढाल है, उसके पीछे मुसलमान (दुश्मनों से) लड़ते हैं और उसकी वजह से लोग मुसीबतों से बचते हैं। "(मुसलिम) यानी, इमाम एक सुरक्षा कवच है, उसके पीछे मुसलमान) दुश्मनों से (लड़ते हैं और उसकी वजह से लोग मुसीबतों से बचते हैं। चूँकि वर्तमान ख़लीफ़ा को अल्लाह ता'आला की तरफ़ से प्राप्त हुए नूर, इल्म, और हक़ की अहमियत को समझने और दुआओं से बरकत पाने के लिए, हमें ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से प्यार और इज़्ज़त का ख़ास रिश्ता बनाए रखना ज़रूरी है। इसके लिए, पहले तो ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के लिए दुआएँ करें और दुआओं के लिए पत्र लिखें। दूसरा, हुज़ूर के सभी ख़ुत्बे, भाषण, और सभी कार्यक्रम सुनें और देखें। तीसरा, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त द्वारा स्थापित हिदायत का पालन करें। चौथा, जमाअत के सभी लोगों के साथ ख़ास दया और सहानुभूति से पेश आएँ। हज़रत अक़दस मसीह मौउदअलैहिस्सलाम कुदरते-ए-सानी (खिलाफ़त) के बारे में फ़रमाते हैं, "इसलिए, तुम इस मक़सद का पालन करो। "

(रिसाला-ए-वसीयत, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 20, पृष्ठ 306-307)

हज़रत मुसलेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, "वही ख़ुदा जो उस वक़्त सेना के साथ मदद के लिए आया था, आज मेरी मदद पर है और अगर आज तुम ख़िलाफ़त की आज्ञा मानने के महत्व को समझोगे, तो तुम्हारी मदद भी आएगी।"

(अल-फ़ज़ल,4 सितंबर 1937)

हज़रत ख़लीफातुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह ताअला बिनसरिहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"अगर कुदरत-ए-सानी (यानी ख़िलाफ़त) न हो तो इस्लाम कभी तरक्की नहीं कर सकता। इसलिए इस ताक़त के साथ ख़ुदा से पूरी ईमानदारी, मोहब्बत, वफ़ादारी और इज़्ज़त का रिश्ता बनाए रखें। ख़िलाफ़त की आज्ञा मानने की भावना को हमेशा के लिए कायम रखें और इस मोहब्बत को इतना बढ़ाएँ कि इस मोहब्बत के मुक़ाबले अन्य सब रिश्ते छोटे लगने लगें। इमाम से जुड़ाव में ही बरकतें हैं, और वही हर तरह की परीक्षाओं और मुसीबतों से बचाव है।"

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 23 मई 2003, पृष्ठ 1)

दुआ है कि अल्लाह ता'आला हम सबको ख़िलाफ़त से जुड़े रहते हुए ख़िलाफ़त की बरकतों से नवाज़े। आमीन।

(6) ख़िलाफ़त के विरोधियों का अंत

(एच .शम्सुद्दीन)

(काइद तरबियत, मजलिस अन्सारुल्लाह भारत)

अल्लाह ता'आला ख़िलाफ़त के विरोधी लोगों के बारे में फ़रमाता है कि, " وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ" (अल-नूर 56)। इसका मतलब है, "और जो लोग इसके बाद भी इनकार करते हैं, वे ही तो फासिक हैं। "हज़रत ख़लीफ़ा-उल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद, या यहाँ तक कि उनके अंतिम दिनों में, कुछ फ़ितना फैलाने वाले लोग और समूहों ने ख़िलाफ़त प्रणाली को ख़त्म करने की कोशिशें फिर से शुरू कीं, और हज़रत मसीह मौउदअलैहिस्सलाम की नबुव्वत और शिक्षाओं को त्याग दिया। उन्होंने वसीयत के नियमों और बहिश्ती मक़बरा से खुद को दूर कर लिया, और अराजकता का शिकार होकर, बहुत दुःख और पछतावे के साथ इस दुनिया से चले गए। सच तो यह है कि:

लानत को पकड़ बैठे इनाम समझ कर तुम
हक़ ने जो रिदा भेजी तुम इस को रदा समझे

आइए !अब देखते हैं कि ख़िलाफ़त के विरोधियों का अंत कैसा हुआ? आज अहमदिया जमाअत का इतिहास गवाह है कि जमाअत से अलग होने वालों को कभी भी किसी तरह की तरक्की नहीं मिली। इसलिए, ख़िलाफ़त-ए-सानी के लगभग 40 साल बाद, गैर-मुबाईन के अख़बार" पीग़ाम-ए-सलह "ने खुद माना कि" यहाँ लाहौर में हमारे काम शुरू हुए 37 साल हो चुके हैं, और हम इस चारदीवारी से बाहर नहीं निकले हैं। "

(पैग़ाम-ए-सुलह, 6 फ़रवरी 1952)

इसी तरह, अंजुमन-ए-इशआत इस्लाम के सचिव ने 50 साल बाद अपनी रिपोर्ट में लिखा, "हकीक़त और अनुभव ने हमारे सामने इस कड़वी सच्चाई को साफ़ कर दिया है कि इस्लाम के प्रचार के क्षेत्र में हमारी कामयाबी,जमाअती तरक्की, उम्मीदें, धार्मिक मक़सद,ये सब झूठे सपने साबित हुए। "

(अहमदिया अंजुम- ए-इशआत इस्लाम की 52वीं सालाना रिपोर्ट, पृष्ठ 5)

मौलवी मोहम्मद याकूब साहब, पत्रिका "लाइट"के संपादक लिखते हैं, "अन्दोलन एक लाश बन गया था और कुछ लोग उसे उखाड़-उखाड़कर खा रहे थे। "

(पैग़ाम-ए-सुलह, 24 जनवरी 1952)

दूसरी तरफ़, इस गैर-मबाईन समूह के अमीर मौलवी मोहम्मद अली साहब को भी ग़म और मुसीबत की स्थिति में इस दुनिया को अलविदा कहना पड़ा। उनकी जमाअत में, मौलवी साहब के खिलाफ़ कुछ लोगों ने विद्रोह का झंडा उठाया। इसके बारे में, मौलवी साहब की पत्नी ने लिखा, "अंततः इन बुराइयों की वजह से मौलवी साहब की सेहत बिगड़ गई और इन विचारों ने उनकी जान ले ली। सभी डॉक्टर यही कहते थे कि इस दुःख की वजह से हज़रत मौलवी साहब की जान चली गई। "

(हवाला : ग़लबह-ए-हक़, पृष्ठ 15)

हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह अव्वल رضی اللہ عنہ कहते हैं, "जो इन(ख़लीफ़ों) का इनकार करता है, उसकी पहचान यह है कि उसके अच्छे काम कम होते जाते हैं और वह धार्मिक कार्यों से दूर हो जाता है। "

(अल-फ़ज़ल, 17 सितम्बर 1913)

अंत में, मैं अपनी बात हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह राबे رحمہ اللہ के एक अंश से ख़त्म करता हूँ: "अब, इंशाअल्लाह, अहमदिया ख़िलाफ़त को कोई ख़तरा नहीं होगा। जमाअत ईश्वर की नज़र में पूर्णता को प्राप्त कर चुकी है। कोई दुश्मन की नज़र, कोई दुश्मन का दिल, कोई दुश्मन की कोशिश भी इस जमाअत का बाल भी झड़ा नहीं सकेगा, और अल्लाह की कृपा से, अहमदिया ख़िलाफ़त उसी शान और शौक़त के साथ आगे बढ़ती रहेगी जिस शान के साथ अल्लाह ता'आला ने हज़रत अक़दस मसीह मौउद अलैहिस्सलाम से वादा किया था, कम से कम एक हज़ार साल तक यह जमाअत जीवित रहेगी। "

(ख़ुत्बा जुम्मा,18 जून 1982, ख़ुतबात-ए-ताहिर, खंड 1, पृष्ठ 18)

अल्लाह हमेशा ख़िलाफ़त को बनाए रखे, और इस जमाअत में ये नेमत बनी रहे।ख़िलाफ़त के विरोधियों के इस भयानक परिणाम को ध्यान में रखते हुए, हमें हर वक़्त ख़िलाफ़त से जुड़े रहने और ख़िलाफ़त की पूरी इताअत की अल्लाह ता'आला से तौफ़ीक़ माँगनी चाहिए। आमीन।

क्या आज आप ने ये विरद कर लीया हे

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّد (۲۰۰بار)

اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْہِ (۱۰۰ بار)

رَبِّ کُلُّ شَیْءٍ خَادِمُکَ رَبِّ فَاحْفَظْنِیْ وَانْصُرْنِیْ وَارْحَمْنِیْ (۱۰۰ بار)